श्री लक्ष्मी नरसिंह प्रसन्न

०१. ऐल्लि हरिकथा प्रसंगवो...

ऐल्लि हरिकथा प्रसंगवो अल्लि गंगा यमुना गोदा सिंधु सरस्वति
ऐल्ल तीर्थगळु बंदु ऐणॆयागि निल्लुवुवु
वल्लभ श्री पुरंदर विठलनु मॆच्चुवनु
जय हरि ऍंबुवुदॆ सुदिनवॊ
जय हरि ऍंबुवुदॆ तारा बलवॊ
जय हरि ऍंबुवुदॆ चंद्र बलवॊ
जय हरि ऍंबुवुदॆ विद्या बलवॊ
जय हरि ऍंबुवुदॆ दैव बलवॊ,
जय हरि नम्म पुरंदर विठलनु बलवय्य सकल सुजनरिगॆ

सतत गणनाथ..

सतत गणनाथ सिद्धियनीव कार्यदलि मति प्रेरिसुवळु पार्वतिदेवि
मुकुति पथकॆ मनवीव महारुद्र देवरु हरि भकुति दायकळु भारति देवि

युकुति शास्त्रगळल्लि वनजसंभवनरसि सत्कर्मगळ नडॆसि सुज्ञान मति इत्तु
गतिपालुसुव नम्म पवमाननु, चित्तदलि आनंद सुखव नीवळु रमा

भक्त जनरॊडॆय नम्म पुरंदर विट्ठलनु सतत इवरलि निंतु कृतिय नडॆसुवनु